International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

हिन्दी साहित्य – समाज का दर्पण

प्रदीप देशवाल (हिन्दी विभाग)
म0नं0 383, ओल्ड हाऊसिंग
बोर्ड कालोनी, रोहतक

हिन्दी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़े प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा में तलाशी जा सकती हैं परन्तु हिन्दी साहित्य की जड़े मध्ययुगीन भारत की ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली और मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य मे पाई जाती हैं। हिन्दी में गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ और इसने अपनी शुरूआत कविता के माध्यम से की जो कि ज्यादातर लोकभाषा के साथ प्रयोग कर विकसित की गई। हिन्दी में तीन प्रकार का साहित्य मिलता है गद्य, पद्य और चम्पू। हिन्दी की पहली रचना कौन सी है इस विषय पर विवाद है लेकिन ज्यादातर साहित्यकार देवकीनन्दन खत्री द्वारा लिखे गये उपन्यास चंद्रकांता को हिन्दी की पहली प्रामाणिक गद्य रचना मानते है।

हिन्दी साहित्य का इतिहास–

हिंदी साहित्य का आरंभ आठवी शताब्दी से माना जाता है। यह वह समय है जब सम्राट हर्ष की मृत्यु के बाद देश में अनेक छोटे–छोटे शासन केंद्र स्थापित हो गए थे जो परस्पर संघर्षरत रहा करते थे। विदेशी मुसलमानों से भी इनकी टक्कर होती रहती थी। हिंदी साहित्य के विकास को आलोचक सुविधा के लिए पाँच ऐतिहासिक चरणों में विभाजित किया गया है – आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल, नव्योत्तर काल।

(1) आदिकाल

आचार्य रामचंद्र शुक्ल तथा विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इस काल को वीर गाथा काल नाम दिया है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने बीजवपन काल। डॉ0 रामकुमार

वर्मा ने इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियों के आधार पर इसको चारण–काल कहा है और राहुल संकृत्यायन ने सिद्ध–सामंत काल। इस समय की प्रख्यात रचनाओं में चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो, दलपति कृत खुमाण–रासो, नरपति – नाल्ह कृत बीसलदेव रासो, जगनिव कृत आल्ह खण्ड मुख्य है। खड़ी बोली के आदि कवि अमीर खुसरो इसी समय हुए हैं। खुसरो की पहेलियाँ और मुकरियाँ प्रख्यात हैं। जैसे फारसी बोली आईना, तुर्की सोच न पाईना, हिन्दी बोलते आरसी, आए मुँह देखे जो उसे बताए। उत्तर–दर्पण। मैथिल–कोकिल विद्यापति भी इसी समय के अंतर्गत हुए हैं। विद्यापति के मधुर पदो ंके कारण इन्हें ''अभिनव जयदेव'' भी कहा जाता है। आश्रयदाताओं की अतिरंजित प्रशंसाएँ, युद्धों का सुंदर वर्णन, श्रृंगार–मिश्रित वीररस का आलेखन इस साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

(2) भक्तिकाल –

भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्णिम काल कहा जाता है। इस काल को समृद्ध बनाने वाली दो काव्य धाराएँ हैं– (1) निर्गुण भक्तिधारा (2) सगुण भक्तिधारा।

निर्गुण भक्तिधारा को आगे दो हिस्सों में बांटा जा सकता है– संत काव्य। इस शाखा के प्रमुख कवि कबीर, नानक, दादूदयाल, रैदास, मूलकदास, सुन्दर दास, धरमदास आदि हैं। कबीरदास जी ने अपनी ''साखी'' के माध्यम से गुरू के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है –

''गुरू गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाय।
बलिहारी गुरू आपने गोविंद दिया बताए।

निर्गुण भक्तिधारा का दूसरा हिस्सा सूफी काव्य का है। इसे प्रेमाश्रयी शाखा भी कहा जाता है। इस शाखा के प्रमुख कवि हैं – मलिक मोहम्मद जायसी, कुतबन, भंझन, शेख नबी, कासिम शाह, नूर मोहम्मद आदि।

भक्तिकाल की दूसरी धारा को सगुण भक्तिधारा के रूप में जाना जाता है। सगुण भक्तिधारा दो शाखाओं में विभाजित है – रामश्रयी शाखा और कृष्णाश्रयी शाखा। रामाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि – तुलसीदास, अग्रदास, नाभादास, केशवदास, रघुनाथ सिंह, रामचरितमानस तुलसीदास द्वारा रचित –

आनन्दकानने हास्मिंजंगमस्तुलसीतरू।
कवितामंजरी भाति रामभ्रमर भूषिता।।

इसका हिन्दी में अर्थ है – काशी के आनन्द–वन में तुलसीदास साक्षात् चलता फिरता तुलसी का पौधा है। उसकी काव्य–मंजरी बड़ी ही मनोहर है, जिस पर श्रीराम रूपी भंवरा सदा मंडराता रहता है।

कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि– सूरदास (सूरसागर रचना), नंददास (रसमंजरी), गोविंद स्वामी, चतुर्भुज दास, कृष्णदास, मीरा, रसखान, रहीम आदि हैं।

(3) रीतिकाल –

इस काल को रीतिकाल कहा गया क्योंकि इस काल में अधिकांश कवियों ने श्रृंगार वर्णन, अलंकार प्रयोग, छंद बद्धता आदि के बंधे रास्ते की ही कविता है। बिहारीलाल द्वारा लिखित संयोग श्रृंगार में –

बतरन लालच लाल की, मुरली धरि हुकाये। सौंह करे, भौंहनि हँसै,
दैन कहै, नटि जाये।

हालांकि धनानंद, बोधा, ठाकुर, गोविंद सिंह जैसे रीति–मुक्त कवियों ने अपनी रचना के विषय मुक्त रखे। मुख्यतया कवित्त, सवैये और दोहे इस युग में लिखे गए हैं। रीतिकाल के अधिकांश कवि दरबारी थे।

''पद्याकर'' ने एक ही छन्द में तत्कालीन दरबारों की रूपरेखा का आंकन कर दिया है।

गुलगुली गिल में गलीचा है, गुनीजन है

चाँदनी है, चिक है चिरागन की माला है
कहै पद्याकर त्यौं गजक गिरजा है सजी
सेज है सुराही है सुरा है और प्याला है

केशव, बिहारी और भूषण को इस युग का प्रतिनिधि कवि माना जा सकता है। बिहारी ने दोहो की संभावनाओं को पूर्ण रूप से विकसित कर दिया। इनको रीतिकाल का प्रतिनिधि कवि माना जा सकता है।

आधुनिक काल –

आधुनिक काल हिंदी साहित्य पिछली दो सदियों में विकास के अनेक पड़ावों से गुजरा है जिसमें गद्य तथा पद्य में अलग–2 विचारधाराओं का विकास हुआ। जहाँ काव्य में इसे छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग और यथार्थवादी युग इन चार नामों से जाना गया, वहीं गद्य में इसको भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, रामचंद शुक्ल व प्रेमचंद युग तथा अद्यतन युग का नाम दिया गया।

अद्यतन युग के गद्य साहित्य में अनेक ऐसी साहित्यिक विधाओं का विकास हुआ जो पहले या तो थी ही नहीं या फिर इतनी विकसित नहीं था कि उनको साहित्य की एक अलग विधा का नाम दिया जा सके। जैसे– डायरी, यात्रा, विवरण,आत्मकथा, रूपक, रेडियो नाटक, पटकथा लेखन, फिल्म आलेख आदि।

नव्योत्तर काल–

नव्योत्तर काल की कई धाराएँ हैं – एक, पश्चिम की नकल को छोड़ एक अपनी वाणी पानी, दो– अतिशय अलंकार से परे सरलता पाना, तीन– जीवन और समाज के प्रश्नों पर असंदिग्ध विमर्श। कंप्यूटर के आम प्रयोग में आने के साथ–2 हिंदी में कंप्यूटर से जुड़ी नई विधाओं का भी समावेश हुआ है जैसे– चिट्ठालेखन और जालघर की रचनाएँ। हिन्दी में अनेक स्तरीय हिन्दी चिट्ठे, जालघर व जाल पत्रिकाये हैं। यह

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

कंप्यूटर साहित्य केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के हर कोने से लिखा जा रहा है। इसके साथ ही अद्यतन युग में प्रवासी हिंदी साहित्य के एक नए युग का आरंभ भी माना जा सकता है।

भाषा के विकास–क्रम में अपभ्रंश से हिंदी की ओर आते हुए भारत के अलग–अलग स्थानों पर अलग–अलग भाषा शैलियाँ जन्मी। हिन्दी इनमें से सबसे अधिक विकसित थी। अतः उसको भाषा की मान्यता मिली। अन्य शैलियाँ बोलिया कहलाई।

जिस प्रकार आत्मा परमात्मा का बिम्ब एक दूसरे को प्रतिबिंबित करता है, उसी प्रकार साहित्य एवं समाज भी एक दूसरे को प्रतिबिंबित करते हैं।

हिंदी की विभिन्न बोलियों का साहित्य आज भी लोकप्रिय है और आज भी अनेक कवि और लेखक अपना लेखन अपनी अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में करते हैं।

लेखक एवं साहित्यकार सदा से ही अपनी लेखनी के माध्यम से समाज की प्रतिष्ठा और नीति–नियम के अनुसार अपना कर्त्तव्य बड़ी कर्मठता से निभाते रहे हैं। इतिहास गवाह है कि साहित्यकारों के लेखन ने, न केवल यूरोपीय पुनर्जागरण में अपनी महत्त्वपूर्ण और सशक्त भूमिका निभाई है बल्कि भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। इसके अतिरिक्त समाज और राष्ट्र निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान देते हुए नवाचार के द्वारा विकास का एक नया अध्याय भी लिखा। आज भी इनकी प्रासंगिकता बनी हुई है। यदि साहित्य की तुलना जल से की जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि जिस प्रकार पानी का कोई रंग नहीं होता, किन्तु जब वह किसी भी तरल के साथ मिलता है तो वह उसी स्वरूप में समावेशित हो जाता है, उसी प्रकार साहित्य भी विविध विचारों की भावभिव्यक्ति के अनुरूप समावेशित होकर उद्वारित होता है। साथ ही साहित्य को किसी भी जाति और समाज की जीवंतता को प्रमाणित करने वाली धड़कन कहा जा सकता है। जिस प्रकार जीवन और समाज की धड़कन बनाए रखने में स्त्री–पुरूष दोनों का समान हाथ है, उसी प्रकार जीवन के विविध व्यावहारिक एवं भावात्मक स्वरूपों के निर्माण में भी दोनों का समान हाथ है। भारतीय भाषाओं के साहित्य के आरंभ से ही इस बात के प्रमाण मिलने लगते हैं कि इसकी रचना और स्वरूप निर्माण के कार्य में न केवल

पुरूष साहित्यकारों बल्कि नारी साहित्यकारों व लेखिकाओं का भी स्पष्ट एवं महत्वपूर्ण योगदान रहा है इन लेखकाओं ने भी अपनी लेखनी के द्वारा उस समय के समाज के दर्शन कराए हैं जैसे अनुसूया जैसी ऋषि–पत्नियों ने भी अनेक वैदिक ऋचाओं के दर्शन करके वैदिक साहित्य को समृद्ध किया। वैदिक काल के बाद लौकिक संस्कृत–काल की अनेक विदुषी नारियों के नाम मिलते हैं। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल से नारी साहित्यकारों के नाम अवश्य मिलने लगते जिन्होंने अपनी सृजन प्रतिभा के बल पर साहित्य का सम्मान, वर्चस्व और प्रभाव बढ़ाया। भक्तिकाल में कृष्ण–दीवानी मीरा का नाम सर्वोपरि है। मीरा की वाणी में जो सहजता, तरलता, अपनापन है वास्तव में कहीं और नहीं। मीरा की भक्ति परंपरा में ही बाद में बीबी ताज का नाम आता है, जो कृष्ण के सांवले–सलोने स्वरूप पर कुर्बान थी। इसके बाद ''शैख'' नामक कवयित्री की चर्चा भी मिलती है, जिसके बारे में कहा जाता है कि काव्य प्रतिभा में तो वह धनी थी ही, रूप–यौवन में भी धनी थी। हिन्दी साहित्य में संत काव्य–परंपरा में सहजोबाई का नाम भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

आगे चलकर रीतिकाल के प्रमुख कवि बिहारी की पत्नी भी कवयित्री थी। आज जो दोहे बिहारी की रचना माने जाते है, उनमें से अनेक उनकी पत्नी ने रचे थे। माना जाता है कि कविवर गिरधर और उनकी पत्नी मिलकर काव्य रचा करते थे। तभी तो अनेक कुंडलियों में दानों के नाम सामानांतर पर उपलब्ध हैं। कुछ ऐसी नारियाँ भी थी जो साहित्य को काव्य–रचना से समृद्ध बनाया करती थी किन्तु राजमहलों में रहने के कारण उनके नाम सामने नहीं आ पाए।

आधुनिक काल में पहुँचकर तो हिन्दी साहित्य के लिए नारी–सर्जकों का योगदान बहुत बढ़ गया है। काव्य की चर्चा हो या गद्य के विधात्मक रूपों की, श्रीमती महादेवी वर्मा की चर्चा के बिना उसे अपूर्ण ही समझा जाएगा। महादेवी छायावादी काव्यधारा के चार स्तंभों में से एक प्रमुख स्तंभ तो रही ही है, गद्य सर्जना के क्षेत्रों में उन्हें एक प्रमुख शैलीकार का मान प्रदान किया जाता है। आजकल और नई नवयुवक नारियाँ भी हिन्दी काव्य के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट प्रतिभा का परिचय दे रही हैं। गद्य के विधात्मक रूपों,

विशेषकर कहानी उपन्यास के क्षेत्र में कई नारी सर्जकों का नाम बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाने लगा है। मन्नू भंडारी जैसी कुछ कहानी–लेखिकाएं भी है कि जिनकी कहानियों के अनेक फिल्मी और नाटक्य रूपांतर सफलता और धूम–धड़ाके के साथ प्रस्तुत किए जा चके है और आज भी होते रहते हैं। इसी प्रकार हिंदी एकांकी और कहानी के क्षेत्र में उषा मित्रा का नाम भी अपना आधारभूत मूल्य महत्व रखता है। रजनी पनिकर को उपन्यास के क्षेत्र में विशेष स्थान प्राप्त है। ममता कालिया, सुधा अरोड़ा, कृष्णा सांबती, उषा प्रियवंदा, शांति मेहरोत्रा, शिवानी, मालती, मृणाल, सुनीता जैन, इंदु बाली, ऋता शुक्ला आदि ऐसे नाम है ं जो कि आज भी हिंदी के माध्यम से नारियों ने माँ की ममता, बहन का स्नेह, प्रियतमा का प्यार सभी कुछ दिया है। संबंधों की चर्चा जितनी गहराई से नारी सर्जकों की रचनाओं में मिलती है कहीं और नहीं। अत' हम कह सकते है। साहित्य का मर्म ही इसका चरम है। यही चरम समाज के लिए उपयोगी है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि किसी भी देश की संस्कृति का अनुमान उसके साहित्य के स्तर से ही लगाया जा सकता है। साहित्य में उस समय की सभी परिस्थितियों का वर्णन होता है। साहित्य न केवल समाज का दर्पण होता है बल्कि उस समय की बुराइयों की ओर ध्यान भी दिलाता है। यह माना जाता है कि किसी देश की सभ्यता तथा संस्कृति के इतिहास को पढ़ने के लिए उसके साहित्य को पढ़ना जरूरी है। विद्वानों ने किसी देश को बिना साहित्य के मृतक के समान माना है।

अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।।

सन्दर्भ

1. सरनदास भनोत, हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. सुमनराजे, हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास
3. **hindimedia.in>literature and Society.**

4. **https://hindisahityapedia.com**

5. **evirtualguru.com>hindi-essay-on-hindi**

6. **https://hi.m.wikipedia.org>wiki>**